अध्याय - चतुर्दश

आहव

(सार छंद)

एकादश अक्षौहिणि सेना, का कर कुशल विभाजन
एक-एक फिर किए चमूपति, वीर मान के भाजन ।
द्रोण और कृप अश्वत्थामा, को सादर बुलवाया ।
एक-एक अक्षौहिणि बल का, उनको प्रमुख बनाया ॥**1**॥

इसी तरह मद्रेष शल्य भी, सैंधव[1] वीर जयद्रथ
किए गए अभिसिक्त सुदक्षिण, नृप बाह्लीक अप्रतिरथ[2] ।
वीर अतिरथी कर्ण चमूपति, किए गए कृतवर्मा ।
सुबल राजसुत शकुनि और वे, भूरिश्रवा श्रुतकर्मा[3] ॥2॥

फिर आग्रह किया पितामह से यह आ कर ।
बल बुद्धि शौर्य के आप नीति के आकर[4] ।
हमको कृतार्थ प्रभु करें बने सेनानी ।
बोला सविनय यह वचन सुयोधन मानी ॥**3**॥

जब तक घन अनुभवधन सुयोग्य बलनायक ।
बलवान विक्रमी स्वयं सुधनु[5] वरसायक[6] ।
हो नहीं कौन बनता अरित्रास विधायक ।
अतएव विघ्नहर बने यथा गणनायक ॥**4**॥

त्रैवर्ण[7] सैन्य था जब तक रहा अनेता ।
हैहय क्षत्रिय ही रहे समर के जेता ।
जब सौंप दिया नेतृत्व राम[8] के ऊपर ।
तब गिरे विषीर्णित शीर्ष छिन्न भुज भूपर ॥**5**॥

त्रिदशेष[9] वाहिनी सूत्रधार षण्मातुर[10] ।
जब बने तभी हो सके निशाचर आतुर ।
अब बने चक्रनायक[11] जैसे सेनानी ।
हो विजित समर में द्रुत अराति[12] बलमानी ॥**6**॥

1. सिंधु देश का	5. श्रेष्ठ धनुष वाला	9. इन्द्र
2. जिसका कोई सामना न कर सके	6. उत्तम बाणों वाला	10. कार्तिकेय
3. विख्यात कर्म वाले	7. तीनों वर्णों की	11. सेनापति
4. निधि, भण्डार	8. परशुराम	12. शत्रु

बोले तब भीष्म समोद वचन मम सुन लो ।
यदि नहीं मान्य हों तुम्हें अन्य नर चुन लो ।
स्वीकार्य तुम्हे हो तो बल[1] भार धरूंगा ।
संग्राम घोर कर रिपु अभिमान हरूंगा ॥**7**॥

मम वध्य नहीं हैं पृथासूनु[2] इस कारण ।
विस्मृत न तातश्री का अशुद्ध उच्चारण ।
रखते हैं मुझमें पूज्य भाव वे संतत ।
कैसे बन सकता उनका ही असुक्रृंतक[3] ॥**8**॥

फिर जहॉ बनेगा द्रोपद[4] मम प्रतियोधी ।
मैं नहीं बनूंगा निज व्रत का उपरोधी[5] ।
अबला ही मैं उसको करता अवधारित[6] ।
अतएव न होंगें आयुध कर में धारित ॥**9**॥

पांडव प्रार्थित उपदेश उन्हें अति हितकर ।
दूंगा होकर भी मैं कौरव वाहिनिधर ।
जब तक मैं हूं रणमग्न हुआ सैनानी ।
दृष्टा होकर ही रहे कर्ण अभिमानी ॥**10**॥

स्वीकार्य मुझे सब है अब करें अनुग्रह ।
धारें रणरथ सारथी आपही प्रग्रह[7] ।
देदें मुझको वरदान पितामह जय का ।
बोले कुरू है आशीष सदैव अभय का ॥**11**॥

बोले कुरू मैं हूं वचनबद्ध इस कारण ।
कर रहा युद्ध मैं कवचायुध का धारण ।
प्रतिदिन मेरा संधान अमित बाणों का ।
अवशोषक होगा दस सहस्त्र प्राणों का ॥**12**॥

1. सेना	4. द्रुपद पुत्र शिखण्डी
2. पाण्डव	5. अवरोधक
3. प्राण नाशक	6. मानता हूँ
	7. लगाम, बागडोर

रथ एक सहस्त्र करूंगा मैं भूलुण्ठित ।
मेरे समक्ष है शौर्य सभी का कुंठित ।
क्षय होगा पांडव दल का इतना भारी ।
रक्षार्थ सास्त्र होंगे प्रण छोड मुरारी ॥**13**॥

रोला छंद

भीष्म शिविर समवेत, सैन्य के प्रमुख वीर हैं ।
क्या है युध्द विधान, जानने को अधीर हैं ।
दुर्योधन ने कहा, सैन्य विन्यास बताएं ।
परबल का वैशिष्टय, सविस्तर नृप समझाएं ॥**14**॥

कहा भीष्म ने रूप, शत्रु बल का सुन लो तुम ।
फिर संरोध[1] उपाय, कुशलता से चुन लो तुम ।
विजयावह योजना, मात्र पर बल विज्ञाता ।
को होती निर्मेय[2], वही बनता दलत्राता ॥**15**॥

सप्ताक्षौहिणि सैन्य सप्तभागा शोभित है ।
सप्तद्वीपजयक्षमा[3] गजाश्व रथारोहित है ।
द्रौपद द्रुपद विराट भीम उसके सेनानी ।
चेकितान युयुधान वीर यज्ञज अभिमानी ॥**16**॥

यज्ञाग्निजात[4] जो महावीर द्रोपद है ।
वह द्रष्टद्युम्न अतिरथी युद्ध कोविद[5] है ।
धृतप्रण षण्मुख[6] सम योग्य वाहिनी पति है ।
उद्देश्य सदा जिसका गहना कुरूक्षति है ॥**17**॥

कर ली विशाल सेना धर्मज ने सज्जित ।
भारत होगा अब रूधिरार्णव में मज्जित ।
है पांचालाधिप द्रुपद प्रेष्ठ संबंधी ।
मत्येष विराट हुए मैत्री अनुबंधी ॥**18**॥

1. रोकने के	4. यज्ञ से उत्पन्न
2. निर्माण योग्य	5. विशेषज्ञ
3. सारी पृथ्वी के जीतने में समर्थ	6. कार्तिकेय

है धृष्टद्युम्न उद्यत गुरू के ही वध को ।
मुझसे परिशोध[1] अभीष्ट उधर द्रौपद[2] को ।
शैनेय[3] यूथपति के यूथप हैं रण में ।
मगधेश सूनु सहदेव कुशल प्रहरण में ॥**19**॥

शिशुपाल पुत्र जो चेदिवीर बलधारी ।
है धृष्टकेतु पांडवजन का हितकारी ।
मातुल पवनात्मज के पुरूजित हैं रण में ।
अतिरथी वीर जो दक्ष अराति क्षरण में ॥**20**॥

हैं श्रेणिमान वसुदान दानयुत[4] गज से ।
अतिरथी यहॉ आए प्रमत्त रण मद से ।
रोचिष्णु[5] महारथ रोचमान दृढ़ रक्षी ।
विक्रम से जिनके भीत सदा प्रतिपक्षी ॥**21**॥

हैं आठरथी समतुल्य भीम भयकारी ।
होंगें कौरव वीरों के द्रुतक्षयकारी ।
अर्जुन अनुपम अतिरथी अजेय धनुर्धर ।
प्रतिरोधन क्षम जिसका मैं या फिर गुरूवर ॥**22**॥

अतिरथी वीर सौभद्र मान अधिकारी ।
द्रौपदी पुत्र वे पॉच महारथ भारी ।
अज भोज सत्यधृति चेकितान ये सारे ।
रण दुर्मद योध्दा सम्मुख खड़े हमारे ॥**23**॥

रोला छंद

सेनाबिंदु जयंत, चित्र आयुधी महौजा ।
सत्यजीत बलधाम, शिखण्डी नर अमितौजा ।
काशिराज बलवान, घटोत्कच घोर निशाचर ।
अर्दनक्षम[6] हैं अयुत[7], विपक्षी नित्य चमूचर[8] ॥**24**॥

1. प्रतिशोध, बदला	6. मर्दन करने में सक्षम
2. शिखण्डी	7. दस हजार
3. शिनि के पौत्र सात्यकि	8. सैनिक
4. मद जल बहाने वाला	
5. कान्तिमान	

यह सुविपुल भी सैन्य, दलित बस मासावधि में ।
कर सकता नि:शेष, सार यह मम बल निधि में ।
है आचार्य विधेय[1] यही समतुल्य समय में ।
कृप को द्विगुणित अवधि, लगेगी सैन्य विलय में ॥**25**॥

मम विक्रम आहार, सैन्य पर दस दिवसों का ।
द्रोणायनि आकूत[2], काल आयुध अवषों का ।
कहा कर्ण ने पॉच, दिवस मे ही यम ग्रह में ।
पहुँचा दूँगा सकल, बैरि इस कटु विग्रह में ॥**26**॥

है उत्साह प्रशस्य[3], किन्तु परगुणगणमहिमा ।
जिनको है अवमन्य, प्राप्त करते वे लघिमा[4] ।
रिपुबल का सापेक्ष, सुसंगत रूप निरूपण ।
कहा भीष्म ने कर्ण ,करो बन नीति विचक्षण[5] ॥**27**॥

ग्यारह अक्षौहिणी, हमारा सेना बल है ।
यह रथाश्व गज और, पदातिक से संकुल[6] है ।
हैं सहस्त्रशः रथी, महारथ भी अगणित हैं ।
नव अतिरथी महान, शौर्य जिनका सुविदित है ॥**28**॥

भरद्वाज के पुत्र, द्रोण कृप भी शारद्वत[7] ।
अष्वत्थामा शल्य, और पौरव रण उद्यत ।
युद्धशौंण्ड[8] बाहलीक, भोजवंशी कृतवर्मा ।
भूरिश्रवा विक्रांत, और मैं भी दृढकर्मा ॥**29**॥

सानुज[9] कुरूपति बली, आप भी रण दुर्मद हैं ।
सिन्धुराज[10] भगदत्त, प्राप्त यह मानित पद हैं ।
सत्यवान नृप श्रेष्ठ, अलम्बुष क्रूर क्षपाचर[11] ।
महारथी ये वीर, उदित रण मध्य प्रभाकर ॥**30**॥

1. आचार्य के द्वारा करणीय	7. शरद्वान ऋषि के पुत्र
2. प्रशंसनीय	8. युद्ध के प्रति अतिशय रूचि व कुशलता रखने वाला
3. लघुता	
4. अनुमान	9. भाईयों के सहित
5. ज्ञानी	10 जयद्रथ
6. आकीर्ण, भरा हुआ	11. राक्षस

रोला छंद

हैं कांबोज नरेश, सुदक्षिण और नील भी ।
विंद और अनुविंद, अवंतिक विजयशील भी ।
लक्ष्मण है तव सूनु, शकुनि भी योद्धा सौबल ।
रथी मुख्य हैं सभी, सहित नरराज वृहद्वल ॥**31**॥

नहीं अतिरथी रथी, तुम्हारा मित्र कर्ण है ।
गुरूवंचक[1] गतकवच, शप्त अतिशय विवर्ण है ।
अर्धरथी इस हेतु, मात्र वह मेरे मत में ।
रणजय असफल रहा, दृप्त वह सदा विगत में ॥**32**॥

कहा द्रोण ने यही, कर्ण प्रति मम अभिमत है ।
श्लाघी[2] विग्रहवान[3] ,तुम्हारा यह उपकृत है ।
सुनकर ज्वाला रूप, हुआ वसु विक्रमशाली ।
उदयकाल आरक्त, रूप ज्यों हो करमाली[4] ॥**33**॥

यद्यपि रण आसन्न, न निंदा वृष्टि थमी है ।
अवमूल्यन पर हन्त! , आज भी दृष्टि जमीं है ।
पाता यदि अपमान, मनुज धर्मिष्ठ अपातक[5] ।
पक्ष हानि इस समय, भासती मुझको घातक ॥**34**॥

बोला वसु जब तक भीष्म रहेगें रण में ।
रण से उपरत हूँ खेदयुक्त धृतप्रण में ।
संगर[6] में होगें नहीं उपस्थित जिस क्षण ।
प्रांरभ करूंगा मैं अराति[7] पर प्रहरण ॥**35**॥

शांतनु सुत ने भी कहा यही है उत्तम ।
वसु लडे या कि फिर भीष्म मात्र कुरूसत्तम ।
तब सरूष[8] सभा से गया महान धनुर्धर ।
जिसके विक्रम पर कौरव रहा सुनिर्भर ॥**36**॥

1. गुरू को धोखा देने वाला	5. निष्पाप
2. डींग हाँकने वाला	6. युद्ध
3. लड़ाई करने के स्वभाव वाला	7. शत्रु
4. सूर्य	8. कोप युक्त

सब गए सोच में पडे भीष्म अति भारी ।
क्या नियति नटी का खेल कालगति न्यारी ।
आजीवन जो नर रहा धर्म का रक्षी ।
है बना खड़ा अति प्रबल नीति प्रतिपक्षी ॥**37**॥

मुझको लगता कुरू का क्षय अब निश्चित है ।
भूमिका युद्ध की अंग सहित विरचित है ।
केशव जैसे नीतिज्ञ शांति अन्वेषक ।
हो गए अन्ततः हार समर तिथि प्रेषक ॥**38**॥

जब पॉच ग्राम भी दे न सका अग्रज को ।
यह भूल भीम का शौर्य रोष उग्रज को ।
जब हरि बंधन के हेतु हुआ उद्यत यह ।
तब समझ गया मै अंतिम कुरू अपकृत[1] यह ॥**39**॥

था भान पांडवों को कौरव के हठ का ।
उत्तर था उनको ज्ञात मदोद्धत शठ का ।
पर शांति प्रयास किया अंतिम वेला भी ।
सह गए कृष्ण कौरवकृत अवहेला[2] भी ॥**40**॥

यह मार्ग शीर्ष की अमानिशा[3] भी आई ।
रण हेतु कृष्ण ने जो तिथि थी बतलाई ।
गजपुर से जाते समय कर्ण से बोले ।
अब सात दिवस उपरांत काल मुख खोले ॥**41**॥

तट हिरण्वती[4] का अब ज्यों नगर बना है ।
पाण्डव पृतना[5] का वृहत पड़ाव घना है ।
सज्जित गज देखें निज छवि जल छाया में ।
हैं मुदित वाजिदल उदित सार काया में ॥**42**॥

1. पाप, दुष्कर्म
2. अवज्ञा अपमान, उपेक्षा
3. अमावस्या (अग्रहायण मास की)
4. कुरूक्षेत्र में बहने वाली नदी
5. सेना

प्रेषितदूतउलूक[1], मूढ यह दुर्योधन है ।
कृत रण निश्चय सुदृढ़, आज पाण्डव का मन है ।
होगी आयुध कांति, प्रात सविता[2] आलोकित ।
तब युयुत्सुजनवदन[3], करेंगे वे आलोकित ॥**43**॥

पंचचामर वृत्त

खड़ी अनीक[4] कौरवी व्यवस्थिता रणाग्र[5] में ।
अराति[6] प्रेष्य[7] है सवेग मृत्यु के मुखाग्र में ।
प्रवीर सास्त्र कंचुकी[8] करें सुघोर गर्जना ।
रणापदेश[9] से करें यहां विसर्ग[10] सर्जना ॥**44**॥

निषंग[11] वाण पूर्ण है विशाल चाप धारते ।
अमेय कांति शांति से स्ववाहिनी निहारते ।
समग्र रूप शौर्य का धरार्वतीण आज है ।
विलोक भीष्म को सभीत वैरि का समाज है ॥ **45**॥

प्रकर्ष[12] प्राप्त कौरवी चमू जयार्थ है बढ़ी ।
विराट वीचि[13] अब्धि की अवार्यता लिए चढ़ी ।
बढ़े विशाल दंति दानवारि[14] युक्त काल से ।
चले तुरंग संगरोचिता[15] विशेष चाल से ।।**46**॥

विनिश्चयात्मिका अतीव बुद्धि त्याग तर्क को ।
निषात[16] आयुधी विभा करे अकान्ति अर्क[17] को ।
हुई अराति के प्रयाण मार्ग की प्रकाशिका ।
प्रहार धर्मिता बनी मनुष्य की प्रशासिका ।।**47**॥

उड़ी असीम रेणु दृष्टि खो रही समर्थता ।
पदाति हैं सखेद अस्त्रपात मात्र व्यर्थता ।
गजाश्व स्यन्दनादि से विमर्द हो रहा महा ।
महारथी विशेष यत्नवान हों प्रवीरहा[18] ।।**48**॥

1. शकुनि पुत्र उलूक को दूत के रूप में भेजने वाला	2. सूर्य	3. युद्ध के अभिलाषी योद्धाओं के मुख
	4. सेना	5. सेना मुख, दो सेनाओं के मध्य क्षेत्र
6. शत्रु	7. भेजने योग्य	8. कवच युक्त
9. युद्ध के बहाने से	10. प्रलय, त्याग	11. तूणीर
12. अभ्युदय, उत्कर्ष	13. तरंग	14. मद जल
15. युद्ध के लिए उत्सुक	16. तीक्ष्ण	17. सूर्य
18. उत्तम वीरों को मारने वाला		

दोहा

कुन्त खड्ग तोमर गदा, पट्टिश परिघ त्रिशूल ।
शक्ति शूल बाणादि से, हरते प्राण समूल ॥**49**॥

समरभावभावित लड़े, रिपु से सब कुछ भूल ।
परिचालित नर घृणा, से नर के ही प्रतिकूल ॥**50**॥

निज बल दर्शित कर रहे, भारत भर के शूर ।
मानी बल गर्वित विजय, अभिलाषी हो क्रूर ॥**51**॥

प्रमिताक्षरा वृत्त

सब ओर घोर अति युद्ध हुआ ।
लगता कृतांत[1] अति क्रुद्ध हुआ ।
अस[2] मोह छोड़ अति कोप भरे ।
बढ़ते प्रवीर शित[3] खड्ग धरे ॥**52**॥

गजराज भीति कर शब्द करें ।
पदघात से बहुल प्राण हरें ।
क्षण में समीप क्षणमात्र परे ।
शर लक्ष्य भ्रष्ट हय[4] वेग करे ॥**53**॥

सार छंद

उध्दत योद्धा उद्यत नभ में,
काल दन्त तलवारें ।
जिनकी विभा मंद करतीं वस,
सद्य: रक्त फुहारें ।
मिलीं महानदवत युग सेना,
मारण निरत परस्पर ।
शोणित धार वही उसमें था,
नहीं तनिक भी अन्तर ॥**54**॥

दोहा

तारकपंचकतालयुत[5], ध्वजधर रथी महान ।
आंदोलित रणसिंधु में अविचल अचल समान ॥**55**॥

1. यमराज	4. घोड़े
2. प्राण	5. भीष्म का ध्वज जो ताड़ के वृक्ष के चिन्ह
3. पैनी	तथा पांच तारागण के चिन्ह से युक्त था ।

(पंचमाचर)

उड़ा तभी समूह दीप्त वेगवान बाण का ।
न मार्ग था बचा रणांगणस्थ वीर त्राण का ।
प्रमाण दे रहे न शौर्य आयु के अधीन है ।
प्रभा विलोक भीष्म की सपत्न[1] कान्ति लीन है ॥56॥

(प्रमिताक्षरा वृत्त)

विविधास्त्र वान रण मध्य व्रती ।
फिरते अषंक हरि[2] से वन में ।
बहुवीर बाणहत तूर्ण किये ।
रत हेति[3] आज असु[4] सेवन में ॥**57**॥

करके अनेक विधि विक्रम भी ।
वह वीर श्वेत यमधाम गया ।
तट वृक्ष रोक सकता न कभी ।
नद का प्रवाह अति वेग भरा ॥**58**॥

(पंचमाचर)

अमित्र अंधकार को अपास्त[5] मित्र[6] ज्यों करे ।
मृगादि के समूह को विकीर्ण केशरी करे ।
विषाल मेघ राशि छिन्न ज्यों समीर सर्वथा ।
अमेय वीर्य भीष्म शीर्णवैरि[7] दे रहे व्यथा ॥**59**॥

(सार)

मर्दन किया बली वातात्मज[8]
जरालब्ध[9] विग्रह[10] का ।
करो न यत्न जरा[11] जेता इस
कुरू के तुम निग्रह का ।
यह कह छोड़े भल्ल मल्ल पर
विहंसे युद्ध विशारद ।
हो सुविद्ध स्यंदनशायी[12] थे
व्यथित भीम बलदारद[13] ॥60॥

1. शत्रु	5. दूर फेकना, मिटा देना	9. जरा नामक राक्षसी से प्राप्त
2. सिंह	6. सूर्य	10. शरीर
3. अस्त्र	7. शत्रु को छिन्न-भिन्न कर देने वाले	11. वृद्धावस्था
4. प्राण	8. भीम	12. रथ में गिरे हुए
		13. बल के समुद्र

सरसी छंद

किये क्षीण बल क्षोणीभृत[1] सब, क्षिति[2] के अनुपम वीर ।
क्षुब्ध नहीं क्षण को भी यद्यपि, क्षत कौरव्य[3] शरीर ॥**61**॥

दोहा

मात्र एक गज मारकर, गजघाती त्रिपुरारि[4] ।
निहत करीन्द्र सहस्त्रष:, भीष्म न हुए गजारि[5] ॥**62**॥

हयग्रीवोच्छेदक उदित संगर में थे शब्द ।
हयग्रीवोच्छेदक अपर भूपर तुम उपलब्ध ।।63॥

सवैया

भीषण भीष्म प्रताप भयातुर
उद्भट भी भट भाग रहे हैं ।
भास्कर तीव्र करें निज वेग
यही मन में कुछ मांग रहे हैं ।
भीम विनाष विलोक अनेक
महाध्वनि भीम पुकार रहे हैं ।
आहव देव अदेव[6] समान
दिवौकस[7] भी अवधार रहे हैं ॥**64**॥

दोहा

वयोवृद्ध भी वे व्रती, अति वरेण्य[8] थे वीर ।
विक्रम से अविजेय थे, पाण्डव हुए अधीर ॥**65**॥

श्रान्त तुरंगम[9] मन्द थे, रणभू पर रथ चक्र ।
सप्तसप्तिरथ[10] सजव[11] था, वरूणदिशा[12] में वक्र ॥**66**॥

मृतमुमूर्षु वपु पर चरण, धरने में असमर्थ ।
थे हय मंदितवेग बहु, कशाघात[13] थे व्यर्थ ॥**67**॥

धृतविषण्णमुख षिविर में धैर्यसिंधु धर्मज्ञ ।
धवलकीर्ति धर्मज हुए, दलक्षय से चलप्रज्ञ[14] ॥**68**॥

1. राजा	5. शिवजी, हाथियों का शत्रु	9. घोड़े	13. चाबुक का प्रहार
2. पृथ्वी	6. राक्षस	10. सूर्य	14. अस्थिर चित्त वाला
3. भीष्म	7. देवता	11. वेग युक्त	
4. शिवजी	8. श्रेष्ठ	12. पश्चिम दिशा	

प्रमिताक्षरा

क्षति देख-देख दल की रण में ।
अति पाण्डवेय[1] दुख: मग्न हुए ।
निरूपाय से समर भूमि खड़े ।
जय स्वप्न थे सकल भग्न हुए ॥**69**॥

मम सैन्य दैन्य युत आतुर है
हर सत्व क्षीण सुभयातुर है
नर का असीम रण विक्रम भी
अब व्यर्थ भीम कृत है श्रम भी ॥**70**॥

अब कृष्ण दूर जन कष्ट करो
रण की समग्र चिरभीति हरो
विपदाब्धि भूत यह संगर[2] है
सबको प्रतीत यम का घर है ॥**71**॥

दोहा

देख रहे थे बलानुज[3], भी भीषण यह युद्ध ।
करते अनुदिन[4] क्षीणबल, बलरिपु[5] से कुरू क्रुद्ध ॥**72**॥

विदितकृताकृत[6] सुकृतप्रिय[7], कृतिजन परम कृतज्ञ ।
चले कृतात्म[8] कृतांतप्रभु[9], प्रभु भुवनेश गुणज्ञ ॥**73**॥

पंचचामर वृत्त

असह्य हो रहा विनाश पाण्डवेय पक्ष का ।
प्रभाव खो रहा हरेक यत्न युद्ध दक्ष का ।
अषक्त वारणार्थ पार्थ को विलोक क्रुद्ध हो ।
रथांग[10] ले बढ़े मुरारि भीष्म के विरूद्ध हो ॥**74**॥

1. युधिष्ठिर	5. इंद्र	8. आत्मजयी
2. युद्ध	6. जिनको किए गए और न किए गए कर्मों का ज्ञान है।	9. यमराज के भी स्वामी
3. बलानुज श्रीकृष्ण		10. रथ चक्र
4. प्रतिदिन	7. पुण्य कर्म जिन्हें प्रिय हैं	

पंचचामर

सहास भीष्म ने कहा हरे ! अरे सशस्त्र हो ।
क्षपाटलक्ष्यता[1] कभी न रोष की निरस्त हो ।
अतीव क्षोभ पक्ष हानि का नहीं सहा गया ।
जनार्ति[2] के निवारणार्थ अस्त्र भी गहा गया ॥**75**॥

दोहा

ब्रज आप्लावन[3] दोषरत, के प्रति भी न सकोप ।
अधृतचक्र[4] बस कर लिया, कर पर गिरि आरोप ॥**76**॥

धृत उपेन्द्रतावश[5] प्रषम[6], पर इस भीष्म विरूद्ध ।
चक्रपाणि हो बढ़ रहे, पक्षपात यह सि ॥**77**॥

सरसी

बोले केशव वचन भंग भय, तुमको रहता तात ।
मुझे लोकभयहरण सर्व प्रिय, सह कटु वचन निपात ॥**78**॥

सार छंद

मम अजेयता आज मुरद्विष[7]
करते स्वत: प्रमाणित ।
आज वीरता हुई धन्य हो
नव आस्था अनुप्राणित ।
हरि-हरि जेय मान कर जिसको
बढ़े स्वयं रण मग में ।
इससे अधिक काम्य[8] क्या होगा
एक शूर को जग में ॥**79**॥

1. असुरों को ही लक्ष्य नहीं किया	4. जिसने चक्र धारण	6. शान्ति बनाने वाली प्रवृत्ति
2. लोक की व्यथा	5. इन्द्र का अनुज होने के कारण	7. श्रीकृष्ण
3. बाढ़		8. चाहने योग्य, अभीष्ट

सार छंद

कर सकते संकल्प मात्र से
क्षय जो अखिल भुवन का ।
उनकी यह रथचक्रपाणिता[1]
जनती कौतुक मन का ।
अन्तर्यामी भूत वर्ग के
बने सारथी नर के ।
किन्तु अगोचर[2] तुम्ही सूत्रधर
इस कुरूक्षेत्र समर के ॥**80**॥
निज बल मति अनुसार बना मैं
केवल काल सहायक ।
मेरे प्रति ही रोष धारते
तुम क्यों हे सुरनायक[3] ।
हंसे कृष्ण यह भेद खोलना
नहीं उचित कुरूसत्तम[4] ।
रहने दो बस यादव मुझको
छिपा रहे पुरूषोत्तम ॥**81**॥

सरसी छंद

समझा गया अकिंचन जन यह, यदि स्वधाम का पात्र ।
कौन कहेगा नहीं अहेतुक, इसे हरि कृपा मात्र ॥**82**॥

पंचचामर वृत्त

गहे तुरंत पाद पद्म कृष्ण के पृथाज[5] ने ।
करूं सुघोर युद्ध मैं सुना रथी समाज नें ।
सलज्ज हूं अघारि[6] मैं क्षमा करो क्षमा करो ।
प्रशान्त हो मुकुन्द ने कहा न क्षान्ति को धरो ॥**83**॥

अनीतिपक्षता[7] वधार्थ पात्रता बनी यहां ।
कठोर घात आजि[8] का सुधर्म है दया कहां ।
प्रमाद[9] छोड़ बाण विद्ध देह शत्रु की करो ।
विषाद भीति पक्ष की अशेष आशु ही हरो ॥**84**॥

1. रथ चक्र को जो हाथ	4. कुलश्रेष्ठ, भीष्म	7. अन्याय का पक्ष धारण करना
2. इंद्रियातीत, परोक्ष	5. पृथापुत्र (अर्जुन)	8. संग्राम में धारण किए है
3. श्रीकृष्ण, विष्णु	6. श्रीकृष्ण (अघासुर को मारने वाले)	9. असावधानी

(दोहा)

वानर चिन्हित ध्वजायुत, नर[1] नरकारि[2] प्रयुक्त ।
नंदिघोष[3] था आ रहा, श्वेत तुरंगम युक्त ॥85॥

सित[4] हय स्यन्दन[5] सूर्य सा, आता था जब पास ।
समरस्थित श्रुतशौर्य[6] भी, तजते जीवन आस ॥**86**॥

जनता होते दृष्टिगत, युगपद[7] नंदीघोष ।
साधु शूर शठ हृदय में, तोष-रोष आक्रोश ॥**87**॥

हिमवानात्मज[8] के सदृश, कपिकेतन[9] को रोक ।
बोले कुरू लाघव करो, प्रकटित हुए अशोक ॥**88**॥

अप्रतिम गुरू से प्राप्त है, तुमको आयुध ज्ञान ।
गुरू के भी गुरू से मिला, मुझको शास्त्र महान ॥**89**॥

धनुर्वेद के गुप्त बहु, प्रकटित होंगे भेद ।
मैं भी यहां अस्वेद[10] हूं ,तुम भी लड़ो अखेद ॥**90**॥

अनुभव से अभ्यास से, प्रवरा[11] है क्या शक्ति ।
देखे रण में आज जग, परम शौर्य अभिव्यक्ति ॥**91**॥

कृत प्रणाम कौन्तेय ने, किए अयोमुख[12] मुक्त ।
किंतु मार्ग में ही हुए, वे कुरू बाण प्रभुक्त ॥**92**॥

कंकपत्र नालीक षित, अमित भल्ल नाराच ।
क्षेपित क्षिप्र क्षुरप्र भी, चले सतृष्ण पिशाच ॥**93**॥

गाण्डीवी ने फिर किया, सत्वर विषिख निपात ।
उससे द्विगुणित वेग से, था नदीज[13] प्रतिघात ॥**94**॥

1. अर्जुन	5. रथ	9. वानर युक्त ध्वजा वाले अर्जुन
2. श्रीकृष्ण	6. विख्यात वीरता वाले	10. बिना पसीने के
3. अर्जुन का रथ	7. एक साथ	11. श्रेष्ठ
4. श्वेत	8. मैनाक पर्वत	12. बाण(लोहे के फल वाला)
		13. भीष्म

*** कंक पत्र ,नालीक, मल्ल, क्षुरप्र तथा विशिख आदि कर्णो के विभिन्न प्रकार हैं।**

(दोहा)

मंदरवत[1] स्यंदन हुआ, धनु गुण वासुकिसर्प ।
रण सागर मंथन निरत, अपगापुत्र[2] सदर्प ॥95॥

वरधनु खरशर विविध विधि, प्रहरण कुशल रणज्ञ ।
कुरूबलपति सुरसरितनय, बलधृतिवसुधि[3] प्रणज्ञ ॥96॥

भास्कर कर सम प्रकाशित, शित बहु बाण कराल ।
शतश:[4] छोड़े भीष्म ने, गिरे सहस्त्रों भाल ॥**97**॥

(सरसी छंद)

सुरसरितासुत[5] सायक सूदित, देख स्वकीया[6] सैन्य ।
दुर्दम द्वेषण[7] जान जयार्थी, हुए प्रथाज[8] सदैन्य ।
शब्दायित अनवरत षिन्जिनी[9], शित शर मोक्ष प्रवृत्त ।
शूर शीर्ष कर प्राप्त शीर्णता, रचते भीषण वृत्त ॥98॥

लक्षाधिक हैं निहत हमारे, योद्धा विक्रम मूर्ति ।
नौ दिन से कर रहे निरंतर, गंगा सुत प्रण पूर्ति ।
हम पर धृतवात्सल्य न करते, पाण्डव जीवन हानि ।
किंतु किये स्वर्गस्थ अनगिनत, रथी वीर भूजानि[10] ॥99॥

बोले केशव अति अधृष्य[11] है, कुरूबल जब तक भीष्म ।
सायुध हैं रण मध्य प्रभाकर, शत्रु तपन रवि ग्रीष्म ।
तोड़ दिया कुरू ने एकाधिक, बार हमारा धैर्य ।
घातक है पाण्डवी विजय में, उनका संगर[12] स्थैर्य[13] ॥100॥

(हरिगीतिका छंद)

जो सहस्त्रार्जुन जयी जग में, ख्यात सुत जमदग्नि के ।
हैं शिष्य प्रिय समविक्रमी ज्यों, अपर विग्रह अग्नि के ।
गांगेय ये आयुध विशारद, चरित जिनका गेय है ।
रण मध्य उनके हेतु अर्जुन, नहीं अपराजेय है ॥101॥

1. मन्दराचल पर्वत के समान	5. भीष्म	9. धनुष की डोरी
2. भीष्म	6. अपनी	10 राजा
3. बल व धैर्य के समुद्र	7. शत्रु	11. अप्रवेष्य, अपराजेय
4. सैकड़ों	8. युधिष्ठिर	12. युद्ध
		13. स्थिरता, धैर्य

(सरसी छंद)

सानुज[1] धर्मज[2] गये जहां थे, व्रतधारी धर्मज्ञ[3] ।
धनुर्वेद विग्रह से बैठे, कुरू धृतिवान नयज्ञ[4] ।
धर्षितारिबल[5] कुरूबलनायक, दायक रिपुजनभीति ।
धवलकीर्ति ध्रुववचन[6] धामयुत, धृतपाण्डवजनप्रीति ॥102॥

(दोहा)

भव[7] अनुकम्पा के बिना, तीर्य कहां भव[8] अब्धि ।
यदि भवदीय कृपा न हो, नहीं विजय उपलब्धि ॥103॥

भास्कर सम रण भूमि में, जब तक भास्वर[9] आप ।
भीति भेद भ्रम भूरिश:[10], मात्र लभ्य अभिशाप ॥104॥

(पंचचामर)

रणांगणस्थ राजते पिनाकपाणि[11] शर्व[12] से ।
विमुक्ति दे रहे अशेष शूरतादि गर्व से ।
प्रसन्न काल से लगें महारणोत्थ पर्व से ।
समस्त शूर आपके समक्ष हैं सुखर्व[13] से ॥105॥

(दोहा)

यद्यपि हैं हम अवर बल[14], अभिलाषा हो पूर्ण ।
वीर प्रवर वर दें यही, वरण करें जय तूर्ण ॥106॥

हंसे भीष्म भ्रम है कहां, भले छिपो भुवनेश[15] ।
जहां आप हैं भूति[16] नित, जहां नहीं बहु क्लेश ॥107॥

आये रिपु से पूछने, धर्मज मृत्यु उपाय ।
जिसको प्राप्त अमोघ, है प्रभु का नित्य सहाय॥108॥

पर मैं भी गांगेय हूं, बतलाता हूं भेद ।
हे जय अभिलाषी सुनो, अजातारि[17] गत खेद ॥109॥

प्राणी के हैं छूटते, स्थूल भूत संभार ।
देहांतर की प्राप्ति से, नहीं कर्म संस्कार ॥110॥

1. छोटे भाईयों के साथ	7. शिव जी	13. अत्यन्त बौने
2. युधिष्ठिर	8. संसार	14. न्यून बल वाले
3. धर्म के ज्ञाता भीष्म	9. देदीप्यमान	15. विष्व के स्वामी
4. नीति के ज्ञाता	10 भारी मात्रा में	16. कल्याण
5. शत्रु बल को विदीर्ण करने वाला	11. पिनाक धनुष धारी शिवजी	17. अजात शत्रु, जो सबका
6. जिनका	12. शंकर जी	मित्र हो, युधिष्ठिर

(दोहा)

मुनि[1] में नारी लिंगता, यदि प्राधा[2] संदर्भ ।
है मदर्थ यह शिखण्डी, तन-मन से स्त्रीगर्भ[3] ॥111॥

शरणागत नि:शस्त्र द्विज, नारी सुत यदि एक ।
देख न उठते अस्त्र मम, भले रोष अतिरेक ।112॥

जिसकी पूर्व स्त्रैणता[4], धृत ध्वज मंगल हीन ।
उससे रण करके नहीं, करता शौर्य मलीन ॥113॥

(रूपमाला)

यदि पड़े सम्मुख शिखण्डी, द्रुपदसुत पांचाल ।
त्यक्त आयुध मैं रहूंगा, युद्ध में नत भाल ।
मानता उसको अभी भी, भीष्म अबला मात्र ।
वेध दे तब नर हमारा, शीघ्र ही यह गात ॥114॥

शस्त्र जब तक हाथ में है नहीं कोई वीर ।
देखता त्रैलोक्य में जो मार दे लघु तीर ।
अत: करना है रणार्णव यदि तुम्हें यह पार ।
विवश करना निरायुध पर ही अभीक्ष्ण[5] प्रहार ॥115॥

चले ले आशीष कुरू का पर झुके थे शीश ।
मान था अच्युत हृदय में खिन्न थे अवनीश[6] ।
किस तरह होगा अनुष्ठित यह सुदारूण कृत्य ।
हो जयातुर क्या हुए हम मात्र अघ के भृत्य ॥116॥

पूज्य पितामह का हम पर है, कितना गहरा प्रेम ।
निज प्राणो की भी बलि देकर, चाह रहे मम क्षेम[7] ।
पाले बैठे हाय उन्हीं के, प्रति भावना सुक्रूर ।
नहीं जानता हमसे रौरव[8], या कि विजय है दूर॥117॥

1. दक्ष प्रजापति की कन्याएं मुनि व प्राधा	5. लगातार
2. दक्ष प्रजापति की कन्याएं मुनि व प्राधा	6. राजा (युधिष्ठिर)
3. स्त्री भाव से गर्भित	7. कुशल
4. स्त्रीभाव	8. भयानक, नर्क

(रूपमाला)

और अगले दिवस रणभू, पर विपुल कौरव सैन्य ।
था खड़ा कौन्तेय दल भी, तेजयुत गत दैन्य ।
कम्बु[1] ध्वनि के साथ संगर[2], हो गया आरब्ध ।
आज अयुताधिक[3] प्रवीरों, का विगत प्रारब्ध[4] ॥118॥

दृष्टिगत होता समुन्नत, तारकित[5] वह ताल[6] ।
गर्जना करता रणार्णव, हो विपुल उत्ताल ।
गूंजता फिर बाण द्युति के, साथ हाहाकार ।
और फिर होता वहां बस, शांति का विस्तार ॥119॥

जानते थे भीष्म अंतिम, आज उनका युद्ध ।
अत: वे सोत्साह रण में, फिर रहे अनिरूद्ध[7] ।
धृष्टद्युम्नादिक पराजित, किया सात्वत[8] तूर्ण ।
भीम भीमाग्रज[9] हराए, पाण्डु दल संपूर्ण ॥120॥

तब किरीटी[10] ने कहा अब, आ गया वह काल ।
चूमना है विवश होकर, हा हमें छल भाल ।
चलो तुम आगे शिखण्डी, करूं खण्डित नीति ।
धरूं हिंसा पूज्य के प्रति, त्याग सारी प्रीति ॥121॥

(दोहा)

तभी शिखण्डी बीच में, प्रकटा ले धनु बाण ।
निज प्रण पूरण हेतु, दे निर्भीकता प्रमाण ॥122॥
हंसे भीष्म बोले नहीं, मैं नारी से युद्ध ।
कर सकता यह कार्य है, गर्हित[11] शास्त्र विरूद्ध ॥123॥
कही शिखण्डी ने तभी, मर्म भेदिनी बात ।
करते बिना प्रहार ही, कुरूवर अबला घात ॥124॥

1. शंख	6. ताड़ वृक्ष जो भीष्म की पताका में अंकित था
2. युद्ध	7. बिना रोक-टोक के
3. दस हजार से अधिक	8. सात्यकि
4. भाग्य	9. युधिष्ठिर
5. तारों युक्त	10. अर्जुन
	11. निन्दित

(दोहा)

किया विसर्जित शरासन दिया इषुधि[1] भी त्याग ।
समझ गये सब योजना उपजा हृदय विराग ॥125॥

(वीर छंद)

देख शिखण्डी को सम्मुख ही, दिए भीष्म ने आयुध त्याग ।
अम्बा की थी स्मृति हो आयी, जागा मन में पूर्ण विराग ॥
प्रतिशोधानल मैं चिर जलती, अबला की हो इच्छा पूर्ण ।
अब हो चुकी बहुत वय मेरी, जीवन को होने दो पूर्ण ॥126॥

देख निरायुध हुए कुरूद्वह[2], नर[3] ने भी रोके निज हाथ ।
कहा कृष्ण ने सखा न रूचिकर, यद्यपि तुम्हें अभी यह बात ॥
किन्तु दे रहा हूं मैं आज्ञा, करो अनारत[4] बाण प्रहार ।
अवसर यही बचा सकते हो, तुम स्वपक्ष के निंदित हार ॥127॥

(दोहा)

त्रेता में था इन्द्रसुत, अप्रतिरोधरत वीर ।
अप्रतिरोधरत वीर पर, अब मोचनरत तीर ॥128॥

(वीर छंद)

मंत्र मुग्ध से हुए धनंजय, करने लगे निशितशरपात ।
शब्दायित गांडीवमुक्त वे, करते कुरू वपु पर आघात ॥
हुए नहीं रण विमुख भीष्म भी, बढ़ते नर अभिमुख[5] वे धीर ।
कुछ ही क्षण में रोम-रोम में, हुए प्रविष्ट अयोमुख[6] तीर ॥129॥

(दोहा)

तभी चले सायक प्रखर, करते वपु को विद्ध ।
इस प्रकार नर के किया, विजय प्रयोजन सिद्ध ॥130॥

1. तूणीर	4. निरन्तर
2. भीष्म	5. सामने
3. अर्जुन	6. लोहे के फल वाले

(वीर छंद)

आत्मसात कर गयी देह वह, कर्णी शूल भल्ल नाराच ।
रूधिर पिपासु प्रविष्ट हो गए, मानो अगणित क्षुद्र पिशाच ॥
उतरे रथ से खड़े रह सके, किन्तु नहीं क्षण भी कुरूवीर ।
गिरे भूमि पर किन्तु छू सकी, वसुधा नहीं सुदिव्य शरीर ॥131॥

अश्रुतपूर्व शरनिर्मित शय्या, पर राजित थे अब गांगेय ।
पूर्ण हो चुका था वसुधा पर, वसु के इस जीवन का ध्येय ॥
गिरते ही उनके खग्रासवत, कुरूमण्डल था तिमिराच्छन्न ।
हा हा कार मचा था चहुं दिशि, दौड़े सब योद्धा अवसन्न ॥132॥

अर्जुन ने तब आज्ञा पाकर, रचा बाण मय ही उपधान[1] ।
और कुरूतृषा शमन हेतु की, प्रकटित भू से प्रयत[2] महान ॥
धारा गंगा की उमड़ी ज्यों, होकर सकरूण तनय हितार्थ ।
रोया विलख चरण युग सिर धर, बालक वत कातर हो पार्थ ॥133॥

प्राय:क्षिप्तकटूक्ति[3] सुयोधन, भी अपना सब धैर्य विसार ।
लिपट पितामह से रोता था, गुरूपरिताप विदग्ध अपार ॥
द्रोण और कृप धैर्य बंधाते, पर उनका भी नयनज वारि ।
देख रहे थे खड़े विषादित, मान नमित निज शीष मुरारि ॥134॥

धर्मराज अपराध बोध से, गिरे भूमि पर संज्ञा हीन ।
पक्ष विपक्ष आज दोनों ही, भग्न हृदय होकर थे दीन ॥
सभी महारथ जुड़े वहां पर, कुरूवर थे सबके ही मान्य ।
स्नेह प्रवर्षी जलद रहे हैं, ज्ञानी धर्मादर्श वदान्य ॥135॥

होकर फिर प्रकृतिस्थ भीष्म ने, कहा धरोमत गुरू अवसाद ।
विजय पराजय उभय फला है, रण प्रक्रिया ब्रण क्षत्र प्रसाद ॥
खेद यही बस मुझे हो रहा, यहां युद्ध अपनों के मध्य ।
हुए जिगीशावश[4] न बंधु भी, निज बांधव के लिए अवध्य[5] ॥136॥

1. तकिया	2. पावन
3. प्राय: कटु वचन कहने वाला	4. विजय की लालसा से
5. न मारने योग्य	

(वीर छंद)

क्षत्रियहित यह समर धरा ही, स्वर्गारोहण का सोपान ।
वीर वही रखता स्वधर्म का, देश और निज कुल का मान ॥
इसी हेतु अधिगतरणविद्या, करते हैं अनिष[1] अभ्यास ।
क्योंकि सुलभ हैं भोग मोक्ष भी, क्षत्रिय को यदि सुकृत[2] प्रयास ॥137॥

वचन पूर्ण कर दिया सुयोधन, कर पाण्डव बल का अति ह्रास ।
सुतवत पाण्डव मम अवध्य हैं, अत: दिया है केवल त्रास ॥138॥

मेरी बलि लेकर हो जाए, महासमरनरमेध समाप्त ।
करो पुत्र अब संधि शांति सुख, कुरूजन वैभव हो शुभ प्राप्त ॥139॥

सुबल राजसुत ने सोचा था, करके भू को द्यूत ग्रहीत ।
जब तक वर्ष त्रयोदश होंगे, पाण्डव के सविषाद व्यतीत ॥
तब तक कर सायास[3] प्रजारंजन का, सुस्थिर करके राज्य ।
जन विस्मृतपाण्डव कुरूजन को, जनप्रिय कुरू भोगें अविभाज्य ॥140॥

अर्जितदानक्रियादि लोकरूचि, यद्यपि हो बहुसाधनवान ।
और तुम्हारा साथ दे रहे, द्रोण द्रौणि कृप वसु बलवान ॥
किन्तु लोकविस्मृत न पाण्डु सुत, लोकाभिमत हुए परिपूर्ण ।
है न अगुप्त अनीति षकुनि की, नय भार्गव[4] का देखो चूर्ण ॥141॥

पालित अखिल वचन बलशाली, पाण्डवेय[5] धीरज की मूर्ति ।
लौटे जब वन अवधि बिताकर, करनी थी वचनों की पूर्ति ॥
किन्तु सुचिर तक भोग राज्य को, तुम्हें किया लिप्सा ने ग्रस्त ।
अत: लगा है आज दाव पर, कुरूजनपद अस्तित्व समस्त ॥142॥

पाण्डव केशव द्वारा रक्षित, त्यागो पुत्र विजय की भ्रांति ।
अवसर दो अकुलाते मन में, क्षान्ति[6] विराजित हो शुभ शांति ॥
पुत्र विवेकी वही व्यर्थ निज, बल वैभव को करे न क्षीण ।
टाले जो समर्थ होकर भी, विपदा को नर वही प्रवीण ॥143॥

1. लगातार	4. शुक्राचार्य
2. पुण्य, भली प्रकार किया गया	5. पाण्डव
3. प्रयास पूर्वक	6. सहिष्णुता

(वीर छंद)

मान सदा अभिमान कदाचित, हो सकता मानव को रक्ष्य ।
किन्तु त्याज्य है अहंकार सुत, जिसके महासत्व[1] भी भक्ष्य ॥
आए जनपद पर गुरू विपदा, विफल प्रयास सभी हो अन्य ।
तब अन्तिम विकल्प वत संयुग[2], सुत हो सकता है अनुमन्य[3] ॥144॥

(सार छंद)

यद्यपि पांच गांव देने तक
को न हुए तुम राजी ।
है मम दृढ़ विश्वास पलटना
संभव अब भी बाजी ॥
हैं धर्मज उदार केशव भी
सर्व भूत हितकारी ।
शम[4] कामना कदापि न होगी
अवमानिता[5] तुम्हारी ॥145॥

(वीर छंद)

हलधर[6] शिक्षित गदा विशारद, अहंमन्य अतिशय बलवान ।
बोला रोषारूणलोचन हो, जिसकी करते नीति बखान ॥
वे अनीतिमय युद्ध कर रहे, हुए जयेच्छावश अति क्रूर ।
आप सदृष सम्मान्य वीर पर, छल प्रहार करता क्या शूर ॥146॥

जितने छिदे हुए तब वपु में, पूज्य पितामह तीखे बाण ।
उतने द्वेषण[7] अब खोंयेंगे, रण में मेरे हाथों प्राण ॥
सदा मानधन विक्रमशोभी, कैसे बने याचनादीन ।
इससे श्रेष्ठ मार्ग आहव[8] में, गिरना होकर भी असुहीन ॥147॥

शासन के प्राकृत अधिकारी, होते नहीं पिता यदि अक्ष[9] ।
अनुजवनगमन बाद किया है, शासन तवनिर्देशनदक्ष ॥
ज्येष्ठ पुत्र उनका नयबलयुत, कैसे नहीं राज्य का पात्र ।
कौन अपहृता निज लक्ष्मी को, करवा सकता रहते गात्र ॥148॥

1. महान, तेजस्वी	4. शान्ति	7. शत्रु
2. युद्ध	5. अपमानित, उपेक्षित	8. युद्ध
3. अनुमति देने योग्य	6. बलराम	9. जन्मान्ध

वे अजेय दिव्यास्त्रवान हैं, क्यों न बसाते नूतन राज्य ।
नहीं चाहते क्यों कुरूजनपद, रहे विभवसंयुत अविभाज्य ॥
नरकृत निर्घृणता[1] न अदण्डित, रहने दूंगा प्रण है तात ।
भीषण आस्कन्दनसंकल्पित[2], मुझे प्रतीक्षित पुन: प्रभात ॥149॥

धार्तराष्ट्र[3] की सुनकर वाणी, मीलितनयन[4] हुए कुरू श्रेष्ठ ।
नियतक्षयोन्मुखताकर्षितनर, करता अवधूता[5] गो[6] प्रेष्ठ ॥
फलित हुआ उपदेश न विक्रम, निष्फल हुआ आत्म बलिदान ।
कुरूक्षय है अवार्य अब अक्षम, भीष्म अपालित वचन महान ॥150॥

1. निर्दयता	4. आंखे बंद किये हुए
2. आक्रमण	5. जिसकी अवमानना की गयी हो
3. धृतराष्ट्र पुत्र दुर्योधन	6. वाणी

---0---